पाँचवा अध्याय

ममता कालिया और हिन्दी कहानी —

१) ममता कालिया पूर्व हिन्दी कहानी

२) ममता कालिया और समकालिन लेखिकाएँ

३) ममता कालिया की कहानियों का अलगपन

४) हिन्दी कथा साहित्य में ममता कालिया का योगदान।

पाँचवा अध्याय

ममता कालिया और हिन्दी कहानी --

विश्व के प्राय: सभी देशों के उपलब्ध प्राचीन साहित्य में कहानी विधा मिलती है। कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति बहुत प्राचीन है। भारतीय साहित्य में वेद, उपनिषद, पंचतंत्र आदि में हिंदी कहानी का स्वरुप दिखाई देता है। इसमें उपदेश देने का या धार्मिक ग्रंन्थोंका रोचक स्पष्टीकरण है। उसके बाद हिंदी कहानी सिर्फ मनोरंजन या किसी आदर्श को प्रस्तुत करने तक सीमित न रहकर ज़ीवन के यथार्थ से जुड़ी हुई दिखाई देने लगी। हिंदी कहानी को जीवन के यथार्थ से जोडनेका श्रेय प्रेमंचद जी को है।

(अ) ममता कालिया पूर्व हिंदी कहानी --

हिंदी साहित्य में प्राचीन समयसेही नारी की प्रतिष्ठा है। इस देश में आदी कवि वाल्मीकि की रचना 'रामायण' से लेकर आज तक बराबर नारी का चित्रण हिंदी साहित्य में होता आया है। प्रेमचंद ने भी अपने साहित्य में नारी को प्रतिष्ठा दी।

(१) प्रेमचंद

प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को जीवन के निकट लाकर उसे आदर्शवादसे मुक्ति दी । उन्होंने अपने प्रारंभिक कहानियों में आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद का चित्रण किया । तत्कालीन समाज में व्याप्त जनमानस की समस्याओं को प्रेमचंदने अपनी कहानियों का विषय बनाया । उन्होंने अपनी कहानियों में साहूकारी समस्या, जमींदारी समस्या, नारी की विभिन्न समस्यायें, आर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता, छुआछूत समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया । इसके बाद की याने प्रेमचंद की परवर्ती कहानियाँ शुध्द यथार्थवादी-कहानियाँ दिखाई देती हैं। इसमें `कफन`, `पूस की रात`, `ठाकुर का कुआँ` आदि प्रमुख कहानियाँ हैं । प्रेमचंद के लिए नारी एक महान आदर्श थी । उन्होंने नारी को सेवा, त्याग, प्रेम, आदर्श, पवित्रता आदि रुपों में चित्रित किया है। उन्होंने नारी की अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज प्रथा आदि समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया । उनमें `बड़े घर की बेटी`, `घासवाली`, `माँ`, `ज्योति` आदि उल्लेखनीय हैं।

(२) यशपाल --

प्रेमचंदोत्तर काल में हिंदी कहानी की सामाजिक यथार्थ चित्रण की परंपरा दो प्रवाहों मे विभाजित हो गयी । (१) सामाजिक यथार्थ और (२) मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण ।

सामाजिक यथार्थ चित्रण की परंपरा को यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि कहानीकारों ने आगे बढ़ाया । उन्होंने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता, रुढ़ी-संघर्ष, धार्मिक-अंधश्रध्दा, भ्रष्टाचार, कलासंबंधी विचार, नारी की विभिन्न समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। नारी के प्रति सहानुभूति होने के कारण यशपाल के नारी पात्र त्याग, सेवा, बलिदान एवं साहस जैसे गुणों से विभूषित हैं। यशपाल ने अपनी कहानियों में

नारी का पुरुष द्वारा शोषण, समाजद्वारा होनेवाला शोषण, यौन समस्यायें, नारी की कुंठाग्रस्त स्थिति आदि को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। नारी की इन विभिन्न समस्याओंको यशपालने 'पहाड की स्मृति', 'जहाँ हसद नहीं', 'मंगला', 'सोमा का साहस', 'प्रतिष्ठा का बोझ', 'औरत', 'निर्वासिता' आदि कहानियों में चित्रांकित किया है। नारी के प्रति यशपाल के दृष्टिकोन संबंधी डॉ. सुनीलकुमार लव्टे जी ने लिखा है कि, 'उन्होंने नारी को वेश्या, दासी, भोग्या के रुप में चित्रित कर उसकी दशा को सदामता से चित्रित कर उसके प्रति होनेवाला पारम्परिक दृष्टिकोन बदल दिया।'[१]

(३) जैनेन्द्र --

प्रेमचंदोत्तर काल में हिंदी कहानी क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक यथार्थ चित्रण की परंपरा शुरु हो गयी। इसमें जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद जोशी आदि प्रमुख कहानीकार हैं। जैनेन्द्र की 'कु:पन्था', 'पत्नी', 'ध्रुवतारा' आदि कहानियाँ प्रमुख हैं। जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में नारी अंतर्मन को सूक्ष्मतासे चित्रित किया है। 'जान्हवी' कहानी में उन्होंने जान्हवी का चरित्र आधुनिक और भावुक प्रेमिका के रुपमें किया है।

(४) कमलेश्वर --

हिंदी कहानी में 'नयी कहानी' का नारा कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव जी ने लगाया। कमलेश्वर 'नयी कहानी' के प्रमुख कथाकारों में से हैं। उनकी कहानियों की विशेषतायें इस प्रकार हैं --

१) आधुनिकता की अभिव्यक्ति (२) कथात्मकता का अभाव (३) वस्तुचयन में विविधता (४) जीवन के प्रति प्रतिबध्दता (५) बाह्य विचारों से प्रेरित नहीं हैं। कमलेश्वर की कहानियों में आम आदमी की जिंदगी का यथार्थ चित्रण दिखायी देता है। उनकी 'दिल्ली में एक मौत' कहानी महानगरीय

---

१ यशपाल - एक समग्र मूल्यांकन - डॉ. सुनीलकुमार लव्टे - पृ. २५९।

जनजीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है तो दूसरी ओर ' लाश ' कहानी राजनीतिक स्वार्थ के लिए जनसामान्य इन्सान की मृत्यु को दिखाती है। ' लड़ाई ' कहानी भ्रष्टाचार को चित्रित करती है तो ' मैं ' कहानी नैतिकता के -हास को चित्रित करती है। कमलेश्वर के नारी पात्र परंपराबध्द नहीं है। उनके नारी पात्र यथार्थ जिंदगी से जुडे हुए हैं। नारी पात्र के मानसिक संघर्ष को कमलेश्वरने खूबसूरतीसे चित्रित किया है। उनके नारी पात्र समाज के विविध स्तरों से लिये गये हैं। कमलेश्वर की ' बयान ' कहानी में पति के मृत्यु के बाद असहाय नारी को किन-किन दर्दनाक परिस्थितियों से गुजरना पडता है इसका यथार्थ चित्रण दिखायी देता है।

(ब) <u>ममता कालिया और समकालीन लेखिकाएँ</u> --

सन १९६० के बाद हिंदी कथा क्षितिजपर अनेक कथा लेखिकाएँ उभर आयीं। दीप्ति खंडेलवाल, चित्रा मुदगल, सुधा अरोडा, मृदुला गर्ग, राजीसेठ, मृणाल पांडे, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी जैसी कथा लेखिकाओं ने नारी के मन की गहराई में पैठकर उसकी तमाम अप्रकाशित गुत्थीयों को सुलझाने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास पूर्ववर्ती पुरुष कथाकारों के प्रयाससे सर्वथा भिन्न था। सर्वश्री प्रेमचंद, यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय जैसे कथाकारों ने नारी के साथ न्याय करने के उद्देश्य से उनकी तत्कालिन समस्याको स्वर देनेका प्रयास जरुर किया। पर यह प्रयास नारी के प्रति दया-भाव से प्रेरित था। इस चित्रण में न्याय के नामपर एक तरह-से अन्याय ही हो गया। क्योंकि ये कथाकार नारी के मन की सही तलाश करने में असफल ही रहे, ऐसा वर्तमान युग की साठोत्तरी कथा-लेखिकाओंकी कथा में प्रतिबिंबित नारी को देखते हुए लगता है। एक बात मुझे मंजूर है कि इस बीच समाज सेतू के नीचेसे काफी पानी बह चुका। काल की गति से समाज में अनेक परिवर्तन आये जिससे नारी उन कथाकारों के समय की तुलना में अधिक मुक्त, निर्भिक, स्वप्रज्ञ एवं आत्म निर्भर हो गयी। उन कथाकारों के प्रति मेरे मन में अनादार का भाव कतई नहीं है। मेरे विचार में वह उनकी मर्यादा थी।

इस मर्यादाको लाँघकर नारी के रुप की सही तलाश साठोत्तरी महिला

कथाकारों ने की। ममता कालिया के अलावा उपर्युक्त कथा लेखिकाओं ने इसमें योग दिया। नारी के प्रति इन सभी महिला कथाकारों की आस्था एक जैसी होकर भी नारी की प्रस्तुति की पध्दति, वर्ण्यविषय, शैली भिन्न दिखायी देती है। यह भिन्नताही तुलना के लिए हमें बाध्य करती है। उषा प्रियंवदा की `जिंदगी और गुलाब के फूल`` एक कोई दूसरा`, `वापसी`, `कितना बड़ा झूठ`, `ट्रिप`, `सुरंग`, `स्वीकृत` जैसी कहानियाँ टूटते पारिवारीक संबंधों को चित्रित करती है। उषा जी ने भी नारी के अस्तित्व, आत्म निर्भरता, प्रेम, यौन संबंध आदि की चर्चा अपनी कहानियों में की है, परंतु उसमें मर्यादाजन्य संकोच है, वह ममताजी की कहानियों में हमें शायद ही दिखायी देता है।

मन्नू भण्डारी जी ने अपनी कहानियों में प्रेम, विवाह, तलाक, आदि विषयों को अपना वर्ण्य विषय बनाया। इन विषयों को उन्होंने सामाजिक संदर्भों में चित्रित किया। उनकी कहानियों में व्यक्तिगत मूल्यों को प्रतिष्ठा देने का प्रयास नजर आता है। `एक प्लेट सैलाब`, `तीन निगाहों की एक तस्वीर` `कील`, `कसक`, `मैं हार गयी`, `सही सच है`, `बिना दीवारों के घर`, `मेरी प्रिय कहानियाँ` जैसे संकलनों में होनेवाली उनकी कहानियाँ समन्वय और सामंजस्य की भूमिका को देखते हुए ममताजी की तुलना में कुछ पुरानी ही लगती है।

कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में वात्सल्य, वासना, ममता जैसे जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति की। `मित्रो-मरजानी`, `क्यों`, `यारों के यार`, `तीन का पहाड़` जैसी कहानियाँ स्त्री-पुरुषों के यौनाकर्षण, काम-वासना, औध्योगिक और दफ्तरोंमें काम करने वाली नौकरी शुदा नारी, नौकरी के कारण पारिवारीक संबंधों के बढ़ते तनाव आदि को चित्रित करने के सम्बन्ध में ममता कालिया जी से मेल खाती है।

दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी कहानियों का कैनवास, पारिवारीक जीवन ही बनाया है। घर-परिवारकी चार-दीवारी में दम घोटू जीवन जीनेवाली

नारी की कराह-से उनकी अधिकतर कहानियाँ चित्कारती नजर आती हैं। ममता की नारी की तरह उनकी नारी परिस्थितिसे संघर्ष नहीं करती अपितु अपनी असहाय्यता को स्वीकार कर रोती रहती हैं। इसे झूठ नहीं कहा जायेगा पर यह कहानियाँ ममता की कहानियों की तरह नारी में प्राण फूँकती नजर नहीं आती।

मृणाल पाण्डे की कहानियाँ महानगरीय जीवन को ममता कीतरह व्यक्त जरुर करती है पर उनके पात्र हमेशा उन पहाडी और आँचलिक प्रदेशों की ओर आँखे गढ़ाते नजर आते हैं जहाँ से वे आये हैं। रामदरश मिश्र जी की तरह ये कहानियाँ यथार्थ जीवन को व्यक्त जरुर करती है पर जहाँ तक नारी की कसक का सवाल है ये कहानियाँ उतनी नहीं छूती जितनी की अन्य लेखिकाओं की।

इन विभिन्न समकालिन कथा लेखिकाओं के परिप्रेक्षमें जब हम ममताजी की कहानियों को देखते है तो वे उनकी तुलना में अधिक सुस्पष्ट,आक्रमक एवं बेबाक लगती हैं। आये दिन महिलाओं पर पुरुष द्वारा किये जानेवाले अत्याचारों के परिप्रेक्ष्यमें लेखिकाका यह आक्रमक रुप अधिक रास आता है। आधुनिक युग की नारी शरीर,मन,अर्थ सभी दृष्टिसे जब तक पुरुष के दमन और अत्याचारसे मुक्त नहीं होगी,तब तक उसका सारा जीवन तमाम समृध्दि और संपन्नता के बावजूद व्यर्थ है। पुरुष के सभी तरह के आधार उसे दया के पात्र बनाते हैं। ममता जी को यह स्वीकार नहीं है। वह नारी की एक नयी छबी को हमारे सामने रखने के लिए अक्सर छटपटाती नजर आती है। वह नारी की ऐसी छबी बनाना चाहती हैं जो उसकी अपनी हो। तमाम मर्यादाओं की फ्रेम लगाये हुये आईने में वह अपनी नारी के बिंदी और सिंदूर से युक्त चेहरे को चित्रित करने में विश्वास नहीं रखती। ऐसे शृंगार के पिछे होनेवाले पुरुष सत्ताक समाज व्यवस्था के तमाम षड्यंत्रों को वह चूरचूर करना चाहती है। यही कारण है कि ममता कालिया की कहानी अपनी समकालिन कथा लेखिकाओं की तुलना में अलग परिचय देती है।

क) ममता कालिया की कहानियों का अलगपन --

ममता कालिया साठोत्तरी कहानीकारों में प्रमुख हैं। ममता कालिया की अधिकांश कहानियाँ नारी जीवनपरही आधारित है। घर की चार दीवारो में कैद नारी की मुक्ति-आकांक्षा और उसका संघर्ष ममता कालिया की अधिकांश कहानियों का प्रस्थान बिंदू हैं, इसी के आसपास वह समूचे कथानक को बुनती है।

पुरुष सत्ताक पध्दति भारतीय नारी का बरसोंसे शोषण करती आयी है। अपने सामने पत्नी को हेय माननेवाली पुरुष की स्वार्थी-वृत्ति ने स्त्री को पुरुषपराधीन बना दिया है। कालांतर के बाद स्त्री शिक्षा का प्रसार-प्रचार हुआ। स्त्री शिक्षा के कारण स्त्री विचारशील बन गयी। उसके विचारों में परिवर्तन आ गया। वह अपने विचारों के प्रति सजग हो उठी। विचारों की इसी जागरुकता के कारण वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की रक्षा करने लगी। आर्थिक दबाव, मँहगाई तथा पारिवारिक उन्नति के लिये अब वह नौकरी करने लगी। नौकरी करते वक्त उसे घर और दफ्तर में जो मानसिक तनाव बर्दाश्त करना पडता उसी को ममता कालिया ने अपनी स्पष्ट, निर्भिक दृष्टि से अपनी कहानियों में चित्रित किया है। ममता कालिया ने अपनी कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय नारी की आशाओं, आकांक्षाओं, संघर्षों और स्वप्नों का यथार्थ परक अंकन किया है। नारी के प्रति परंपरागत भारतीय दृष्टिकोन को नकारते हुए वे किन्हीं पतनशील जीवन-मूल्यों का स्वीकार नहीं करती, बल्कि समाज के स्वस्थ जीवन मूल्यों को आत्मसात करती हुई, उन्हें नयी सामाजिक अर्थवत्ता प्रदान करती है और यही उनकी कहानियों का अलगपन है।

अपने परिवेश से ही कथ्यों का चुनाव कर उसे अपने सूक्ष्म गहनतम विचारों के आधार पर अभिव्यक्त करने का प्रयास ममता कालिया ने किया है। मध्यवर्गीय आर्थिक अभावों से जुझती नारी किस तरह संघर्षों से सामना करके घर और नौकरी सँभालती है, इसे उन्होंने मार्मिक प्रसंगों के माध्यम से चित्रित किया है। प्रेमिका से पत्नी के स्तर पर उठनेवाली नारी दांपत्य के बासी, उबाऊ घेरे में

पढी नारी इनकी कहानियोंमें आती है। पति, समाज तथा ससुरालवालों की ओरसे शोषित नारी जब आती है तो वह हमें अपनी-सी लगती है। ममता कालियाने जिस सूक्ष्मतासे अविवाहित शिक्षित प्रौढ नारी की समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है, उतना किसी औरने नहीं किया है। अपने पात्रों का उन्होंने मनोविश्लेषण पध्दतिसे वर्णन किया है। नारी के शिक्षित होने के कारण उसकी शादी की उम्र का बढना, समाज की पुरुष - सत्ताक विवाह व्यवस्थासे साशंक होकर शादी से कतराना तथा स्वप्रज्ञ एवं आत्मनिर्भर बनने की ललक से शिक्षित ललनाओं के निर्माण होनेवाले नये व्यक्तित्व की पहचान उनकी कहानियों का अलगपन दिखाता है। बदलते हुये समाज में आज नैतिक मूल्य भी बदल रहे हैं, जिसके कारण आज विवाह एक मिनिंगलेस रस्म बन गयी है। विवाह की महत्ता नहीं रह गयी है। इसीलिये महानगरों में आज विवाह बिना ही स्त्री-पुरुषों का एक-दूसरे के साथ पति - पत्नी की तरह रहना आम बात हो गयी है। इसी पर आधारित उनकी `छूटकारा` कहानी - संग्रह की कहानियाँ हैं। उन्होंने दिन-प्रतिदिन की एक साधारण-सी घटना लेकर भी अपनी कहानियों में विषयों की बहुलता लायी है। अपनी कहानियों में ममता कालिया जी ने नारी समस्या के साथ-साथ आर्थिक विषमता, राजनीति, शिक्षा-क्षेत्र का बदलता स्वरुप, आदि विषयोंपर तीखा प्रहार किया है। अंध-विश्वास, अस्पृश्यता, दहेज जैसे समाज के कोढ को अपनायी हुई समाज व्यवस्थापर उन्होंने मार्मिक प्रहार किया है। ममता जी नारी शोषण के पारंपारिक चित्रों से आगे जाकर शिक्षित वर्ग की नारी के शोषित रुपों को उपस्थित किया है। यह शोषण आज तक आर्थिक मर्यादा तक सीमित था, ममता जी ने उसे शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों में चित्रित कर नये मान प्रस्तुत किये हैं। ममता जी ने परिवेश के पूरे आयामों में घिरनेवाली आज की नारी की विभिन्न मन:स्थितियों को बडी साफगोई के साथ प्रस्तुत किया है। वे मुक्त सेक्स की पक्षधर हैं। इसलिये उनकी प्रेमिकाएँ भावों के ज्वार से ऊपर उठकर शरीर सुख की सीधी माँग करनेवाली बेबाक नारी है जो नारी के पारंपारिक मर्यादा संकोचसे मुक्त नजर आती हैं। यही कारण है कि उनकी नारी अन्य कथाकारोंकी

नारी से सर्वथा भिन्न एवं अधिक यथार्थ भी लगती है। इस तरह ममता कालिया उन चंद लेखिकाओं में से है जिन्होंने जीवन के बृहत्तर आयामों को स्पर्श किया है और बँधी-बँधाई सीमाओं को पार किया है।

ड) हिन्दी कथा साहित्य में ममता कालिया का योगदान --

हिंदी कथा-साहित्य आये दिन नारी की अपने समय की तड़प को स्वर देता आया है। हर युग में विचार के स्तर पर नारी की समानता का अधिकार तत्वत: स्वीकार जरूर किया गया, परंतु जहाँ तक आचरण, व्यवहार एवं अमल की बात है, नारी संबंधी तमाम आदर्शों को ताक पर ही रखा गया। इसके परिणाम स्वरूप अनेक प्रगतिशील सामाजिक आंदोलनों के बावजूद भी नारी घर की देहलीज को लांघ नहीं पायी। पर्दे की मर्यादा उसका गौरव बनी रही। चुल्हा और चौका उसके कर्तृत्व का आंगन बना। नारी इस दुष्ट चक्र में निरंतर फँसती और धँसती रही। उदयोगों का विस्तार, शिक्षा का प्रसार, विश्व साहित्य का करीब आना इन सबके परिणाम स्वरूप भारतीय समाजने धीरे-धीरे यह महसूस किया कि वह घर - घर में कराहती नारी के साथ न सिर्फ अन्याय कर रहा है, अपितु उससे ज्यादती भी हो रही है।

ऐसा एहसास भारतीय कथा-साहित्य में शरतचंद्र चटर्जी, प्रेमचंद, यशपाल, जैनेन्द्र, वि.स.खाण्डेकर, ह.ना.आपटे, गुलाबदास ब्रोकर जैसे आधुनिक विचारों के कथाकारों ने अपनी कहानियों से दिया और नारी को इस छटपटाहट से मुक्त कराने की सलाह दी। परिणामस्वरूप, विशेषत: आजादी के बाद, भारत-वर्ष में राजा राममोहन रॉय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महर्षि धोंडो केशव कर्वे, महात्मा फुले जैसे सुधारकों के विचारों की प्रेरणासे नारी शिक्षा का प्रसार हुआ।

सन् ६० के आसपास हमारी दो पंचवार्षिक योजनाएँ पूरी हो गयी थी। इसके फलस्वरूप शिक्षित नारी की पहली पीढी, सामाजिक, साहित्यिक,

राजनीतिक क्षितिजपर उदयमान हुई। इसके पूर्व लिखी पंक्तियों में कैसे की कहा गया है अनेक महिला कथाकार हिंदी कथा के क्षेत्र में नारी को उसकी तमाम पीडाओं से मुक्ति के हेतु लिखती रही। ममता जी उनमें से एक है।

ममताकालिया ने अपने समकालीन कथा-लेखकोओं की तरह पिट-पिटायी बातों को दोहराना उचित नहीं समझा। विषय, शिल्प, शैली, सभी तरह के वैचित्र्य से वे हिन्दी कथा क्षितिजपर अवतरित हुई। उनकी कहानियों ने हिंदी कथा-साहित्य को अपने योगदान से ऋणी बनाया है। ममताजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से महानगरीय शिक्षित नारी को हमारे सामने रखा। ममता जी की नारी में खरापन होता है। वह नारी को रखते समय मर्यादाओंका कभी विचार नहीं करती। इसलिए उनकी नारी अधिक प्रागतिक एवं आधुनिक नजर आती है। हिंदी कहानी में प्रतिबिंबित नारी को समय की पुकार के रूप में अधिक स्वतंत्र चित्रित करने का श्रेय ममता जी को ही दिया जाना चाहिए। ममता कालिया जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी के विभिन्न रुपों को उपस्थित किया है। महाविद्यालयीन युवती, शिक्षित प्रौढा, नौकरी शुदा नारी, सुखपूर्वक पारिवारीक जीवन व्यतीत करनेवाली नारी, अविवाहित प्रौढाएँ, दहेज की शिकार अनेक रुप। इन सारे संबंध सूत्रों में उनकी नारी पूर्ववर्ती कथाओं में प्रतिबिंबित नारियों की तरह दम घोटू जिंदगी गुजारना पसंद नहीं करती। वह पर्याप्त स्वप्रज्ञ है। वर्तमान समय के संदर्भ में नारी को अपने दायित्व से अवगत कराने का काम ममता जी ने अपनी कहानियों के जरिये किया है।

वर्तमान कहानी - कला के नये प्रयोगों, शिल्प और शैली के नये मानों को उन्होंने स्वीकार किया। आरंभिक नारी की कहानियाँ मात्र आत्मकथा थी, ममता की कहानियों में ये आत्मकेन्द्रियता छूटती नजर आती है। एक दृष्टिसे ममता जी ने महिला लेखिकाओं द्वारा लिखी कहानियों को आत्मीय घेरेसे मुक्त किया है।

सन् साठ के पूर्व हिंदी कहानी की नारी- घर-परिवार के अंत:पुर और

रसोई घरों में खपनेवाली नारी थी। ममता जी के सारे नारी पात्र पढे-लिखे, उच्च मध्य वर्ग के, शिक्षित होने के कारण उनकी कहानियों में भाषा के नये प्रतिमान कायम हुये हैं। अंग्रेजी प्रचुर, व्याकरण सम्मत भाषा के कारण उनकी कहानियों में अनायास आधुनिकता का बोध उभर आता है।

इस तरह हम देखते हैं कि ममता कालिया ने पिछले तीस बरसों में मात्र पचास कहानियाँ लिखी। संख्या में कम ये कहानियाँ गुणवत्ता की कसौटी पर हमेशा श्रेष्ठ सिध्द होती हैं। ममता जी माँग की पूर्ति में लिखनेवाली लेखिका न होकर, जब उनकी आत्मा उन्हें नारी के लिए कोई दायित्व निभाने के लिए मजबूर करती है तभी उनसे लिखा जाता है। दीर्घ चिंतन, मनन के बाद निर्माण होनेवाली इन इनी-गिनी कहानियों ने हिंदी कथा साहित्य को न सिर्फ आगे बढाया बल्कि अपने योगदान से नयी शक्ल-सूरत भी प्रदान की। आशा है कि आनेवाले दिनों में इस उपेक्षित लेखिका के साथ समीक्षक, शोध छात्र न्याय करेंगे। मेरा यह छोटासा शोध-प्रबन्ध उस न्याय-यात्रा का प्रस्थान बिंदू सिध्द होगा, तो मुझे खुशी होगी।